4

यीशु की रक्षा किया जाना

(2:13-23)

''बालक'' को सुरक्षित रखने की रोमांचकारी कहानी में मत्ती ने बताया कि कैसे वह यूसुफ और मरियम के साथ कैसे मिस्र में गया और जब तक उन्हें स्वर्गदूत द्वारा बताया नहीं गया तब तक इस्राएल में नहीं लौटे।

मिस्र में जाना (2:13-15)

[13]उनके चले जाने के बाद देखो, प्रभु के एक दूत ने स्वप्न में यूसुफ को दिखाई देकर कहा, ''उठ; उस बालक को और उसकी माता को लेकर मिस्र देश को भाग जा। और जब तक मैं तुझ से न कहूं तब तक वहीं रहना; क्योंकि हेरोदेस इस बालक को ढूंढ़ने पर है कि उसे मरवा डाले।''

[14]तब वह रात ही को उठकर बालक और उसकी माता को लेकर मिस्र को चल दिया। [15]और हेरोदेस के मरने तक वह वहीं रहा। इसलिए कि वह वचन जो प्रभु ने भविष्यवक्ता के द्वारा कहा था पूरा हो, ''मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया।''

आयत 13. ज्योतिषियों के चले जाने के **बाद** स्वर्गदूत द्वारा **यूसुफ को स्वप्न में मरियम** और बालक यीशु को लेकर **मिस्र देश को भाग** जाने की चेतावनी दी गई। इस जाने का उद्देश्य परिवार और हेरोदेस के बीच अधिक से अधिक दूरी लाना था, कम से कम उसके राज्य की हद से दूर। मिस्र की सीमा बैतलहम से लगभग पचहत्तर मील दूर थी। हेरोदेस का अधिकार केवल मिस्र की नदी तक था। यह 125 मील और आगे या डैल्टा क्षेत्र और नील नदी तक था।

मिस्र जो उस समय रोमी इलाका था, में कई आराधनालयों के साथ यहूदी जनसंख्या अधिक थी (देखें प्रेरितों 2:5, 10; 6:9; 18:24)। फिलोह नामक एक यहूदी दार्शनिक और इतिहासकार जो सिकन्द्रिया, मिस्र में रहता था ने लगभग 40 ईस्वी में लिखा कि उस समय मिस्र में लगभग दस लाख यहूदी रहते थे।[1] प्राचीनकाल के सबसे बड़े पुस्तकालयों में से एक सिकन्द्रिया में था और यहीं पर सप्तति (LXX) अनुवाद हुआ था। मिस्र में जाने से यूसुफ अपने कई लोगों के बीच में पर हेरोदेस की पहुंच से दूर चला गया। जहां तक बाइबल बताती है कि यीशु के जीवन में केवल यही समय था जब वह फलस्तीन से बाहर गया।

यूसुफ को मिस्र में और **रहने** का निर्देश दिया गया जब तक परमेश्वर उस पर प्रगट नहीं करता कि उसके लिए जाना सुरक्षित है। उसे उनके जाने का कारण भी बताया गया, **क्योंकि हेरोदेस इस बालक को ढूंढ़ने पर [था] कि उसे मरवा डाले।**

आयत 14. अतिरिक्त सावधानी के रूप में **यूसुफ** और उसका परिवार **रात** को **मिस्र को**

चल दिया। भाषा से संकेत मिलता है कि यूसुफ के स्वप्न के तुरन्त बाद कार्यवाही की गई; जो उसके परमेश्वर की आज्ञा मानते रहने का पता देता है (1:18-25; 2:13-15, 19-23)। लियोन मौरिस ने लिखा है कि ''स्पष्टतया छोटे निर्धन परिवार, को फुर्ती करने की उनकी तैयारी में अधिक समय नहीं लगना था और स्वप्न से महत्व की समझ भी आई होगी।''[2]

आयत 15. परिवार **हेरोदेस के मरने तक** मिस्र में ही **रहा**। इतिहास के अनुसार, उसकी मृत्यु 4 ई.पू. में मार्च के अन्त में या अप्रैल के आरम्भ में हुई (2:19 पर टिप्पणियां देखें)। परिवार का मिस्र में वास्तव में बिताया गया समय बहुत कम हो सकता है, शायद दो महीने के लगभग।

मत्ती ने यीशु के मिस्र में जाने और वापस आने को होशे के वचनों के पूरा होने के रूप में वर्णित किया गया है: ''**मैने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया**'' (होशे 11:1)। यह वचन मूलतया होशे को परमेश्वर द्वारा इस्राएलियों को मिस्र की दासता में से लाने के सम्बन्ध में लिए गए थे (निर्गमन 12:40-51)। मत्ती ने रूप/प्रतिरूप का ढंग इस्तेमाल करते हुए उन्हें यीशु पर लागू किया। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने व्याख्या की है, ''इन शब्दों को यीशु पर लागू करना इस्राएलियों के मिस्र में प्रवेश करने और वहां से निकलने के यीशु के जाने आने से मेल खाता है।''[3]

डोनल्ड ए. हैग्नर ने इस्राएलियों और यीशु दोनों के निकलने को ''छुटकारे के इतिहास के दो पल'' कहा है। उसने कहा कि ''दोनों को एक-दूसरे के साथ जोड़कर माना जाता है, जिसमें एक अधिक देर तक है; इससे एक बड़ी निरन्तरता बनती है। इस प्रकार पहला बाद वाले की पूर्व छाया या उम्मीद दिखाई देता है, जो पहले वाले का पूरा होना बन जाता है।''[4] इसलिए यीशु को इस्राएल के कष्टों और विजयों में भागीदार के रूप में दिखाया जाता है। दोनों ही मामलों में परमेश्वर को अगुआई करने वाले और रक्षा करने वाले के रूप में देखा जाता है।

डग्लस आर. ए. हेयर ने होशे की बात के सम्बन्ध में ये गम्भीर टिप्पणियां दी हैं (होशे 11:1):

> ... यह पीछे की ओर और आगे को देखता था। जिस प्रकार यीशु के आगमन में एक नई उत्पत्ति थी [1:1, 18], वैसे ही एक नया कूच था। होशे पहले कूच की अनिश्चितता की ओर संकेत करता है: ''परन्तु जितना वे उनको बुलाते थे, उतना ही वे भागे जाते थे; वे बाल देवताओं के लिए बलिदान करते, और खुदी हुई मूरतों के लिये धूप जलाते गए'' (होशे 11:2)। अपने व्यक्तित्व में यीशु इस्राएलियों को दर्शाता है, परन्तु एक विलक्षण ढंग से; अपने आज्ञा मानने में वह इस्राएल के आज्ञा न मानने के विरोध में ठहराता है, केवल वही परमेश्वर द्वारा ''मेरा पुत्र'' कहलाए जाने के योग्य है।[5]

हेरोदेस का क्रोध (2:16-18)

[16]जब हेरोदेस ने देखा, कि ज्योतिषियों ने उसके साथ धोखा किया है, तब वह क्रोध से भर गया; और लोगों को भेजकर ज्योतिषियों से ठीक-ठीक पूछे हुए समय के अनुसार बैतलहम और उसके आस-पास के स्थानों पर सब लड़कों को जो दो वर्ष के व उससे छोटे थे, मरवा डाला। [17]जब जो वचन यिर्मयाह भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हुआ।

18"रामाह में एक करुण-नाद सुनाई दिया,
रोना और बड़ा विलाप,
राहेल अपने बालकों के लिए रो रही थी,
और शान्त होना न चाहती थी क्योंकि वे हैं नहीं।"

आयत 16. जब **हेरोदेस** को यह समझ आया कि **ज्योतिषियों** ने उसके साथ **धोखा किया है** और वे वापस नहीं आएंगे, तो **वह क्रोध से भर गया**। "धोखा किया" का अनुवाद यूनानी शब्द (*empaizō)* जिसमें किसी का मज़ाक करने या ठट्ठा उड़ाने का विचार है। चाहे ज्योतिषियों की यह मंशा नहीं थी पर हेरोदेस ने उनके उसकी आज्ञा न मानने को ठट्ठे में लिया (देखें 2:8, 12)। वह अपने आप से बाहर हो गया। हेरोदेस को जब लगा कि उसके साथ मज़ाक हो रहा है, तो उसका क्रोध काबू से बाहर हो गया और उसने उनसे जिन्होंने उसके साथ मज़ाक किया था, बदला लेना चाहा। वह ज्योतिषियों पर अपना क्रोध नहीं दिखा सकता था, क्योंकि वे तो भाग गए थे; इस कारण उसने समाज के सबसे अबोध भाग यानी छोटे बच्चों की ओर रुख किया जो **दो वर्ष के व उससे छोटे थे**। यह विशेष उम्र क्यों चुनी गई? वचन हमें बताता है कि उसने हिसाब लगाया कि ज्योतिषियों के पहली बार तारा देखने के साथ बालक की उम्र कितनी होगी (2:7)। उसने यह सुनिश्चित करने के लिए कि सही बालक ही मरे कुछ और समय भी जोड़ दिया होगा।

हेरोदेस ने **बैतलहम** और उसके आस-पास के सब **लड़कों** की हत्या का आदेश दे दिया। इस आदेश को माना गया। एक भी नवजात की हत्या बड़ी दुखद होती, जितना हम आम तौर पर अनुमान लगाते हैं हो सकता है कि वास्तव में उससे कम बच्चों की हत्या की गई हो। बैतलहम एक छोटा नगर था और चाहे हमें मालूम नहीं है कि उस समय उसकी सही-सही जनसंख्या कितनी थी, पर कुछ लोग दस से तीस बच्चों की हत्या किए जाने का अनुमान लगाते हैं। उस समय के अन्य इतिहासकारों जिसमें जोसेफस भी है, ऐसे हत्याकांड का उल्लेख क्यों नहीं किया? इसका पहला सम्भावित उत्तर तो यह है कि अपेक्षाकृत कम संख्या में नवजात शिशुओं की हत्या की गई। दूसरा कारण यह हो सकता है कि हेरोदेस द्वारा किए जाने वाले हत्याकांडों को ध्यान में रखते हुए इस पर उस इलाके से बाहर रहने वालों ने ध्यान नहीं दिया होगा।

हेरोदेस परमेश्वर के प्रति अपनी अवज्ञा में भी कठोर था। इस कहानी में उसने यहूदी अगुओं से पूछताछ की थी कि "मसीह का जन्म कहां होना चाहिए?" (2:4)। यह वही मसीहा अर्थात यहोवा का अभिषिक्त था, जिसकी हत्या किए जाने की कोशिश की जा रही थी! हेरोदेस की तुलना फिरौन से की जा सकती है जिसने मिस्र में जन्मे इस्राएलियों के सभी लड़कों को मरवा डालने की कोशिश की थी (निर्गमन 1:15, 16, 22)। परन्तु परमेश्वर ने मूसा को उसके धर्मी माता-पिता के द्वारा वैसे ही बचा लिया (निर्गमन 2:1-10; इब्रानियों 11:23) जैसे उसने यीशु को बचाने के लिए यूसुफ और मरियम को माध्यम बनाया।[6] दोनों ही बार चाहे कई नवजात शिशु मारे गए पर मूसा और यीशु को उनके लोगों के छुटकारे के लिए बचा लिया गया। यीशु के मामले में मैक्गार्वे ने ध्यान दिया है, "बैतलहम के नवजात उसकी सुरक्षा के लिए मारे गए जो सबकी सुरक्षा के लिए मरने को ठहराया गया था।"[7]

आयत 17. तब जो वचन यिर्मयाह भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हुआ। यह आयत या तो (*hina*) या (*hopōs*) के मज़बूत समुच्चयबोधकों को जो उद्देश्य और आम तौर पर मत्ती के पूरा होने के फॉर्मूलों में मिलते हैं, शामिल नहीं किया गया। इन शब्दों का अनुवाद ''ताकि'' हो सकता है। ASV में अन्य फॉर्मूलों में इन समुच्चयबोधकों वाले वाक्यांशों को हर जगह ''*कि*यह पूरा हो'' किया गया है (1:22; 2:15, 23; 4:14; 8:17; 12:17; 13:35; 21:4; 26:56)। हैग्नर ने आगे समझाया:

> अन्य सभी फॉर्मूलों में 27:9-10 को छोड़ एक या दो हैं, जो दिलचस्प ढंग से किसी और बुराई की (केवल यहूदा के धोखे की कमाई) बात करते हुए केवल और उद्धरण है। यह बुराई परमेश्वर के उद्देश्यों के साथ मत्ती की हिचक को दिखाता लगता है। मत्ती के दृष्टिकोण में, परमेश्वर का उपाय उसी अनुग्रहकारी इच्छा में से काम करने में बुराई को निकाल देता है।[8]

आयत 18. मत्ती ने मासूमों की हत्या और भविष्यवक्ता के समय में होने वाली घटना के सम्बन्ध को दिखाते हुए यिर्मयाह 31:15 के शब्दों को उद्धृत किया:

''रामा नगर में विलाप और बिलख-बिलख कर रोने का शब्द लिखने में आता है।
राहेल अपने बच्चों के लिए रो रही है;
और अपने लड़कों के कारण शान्त नहीं होती है,
क्योंकि वह जाते रहे।''

मत्ती के ऐसे शब्दों के इस्तेमाल से या तो प्रतीकात्मक ढंग (रूप/प्रतिरूप) या भविष्यवाणी का दोहरा पूरा होना समझा जा सकता है।

''रामा'' बिन्यामीन के इलाके में यरूशलेम से लगभग पांच मील उत्तर में एक नगर था (यहोशू 18:25)। वर्तमान संदर्भ में ''राहेल,'' ''रोने'' और ''बच्चों'' के उल्लेख के साथ इन तथ्यों से इसकी प्रासंगिकता स्पष्ट है: (1) याकूब और उसका परिवार बेतेल से बैतलहम की ओर अपने मार्ग में दक्षिण में (रामा के पास) जा रहे थे, जब उसकी प्रिय पत्नी राहेल की एक बेटे को जन्म देते हुए मृत्यु हो गई। उसने उसका नाम बेनोनी अर्थात ''मेरे शोक का पुत्र'' रखा जबकि याकूब ने उसका नाम बिन्यामीन अर्थात ''[मेरे] दाहिने हाथ का पुत्र।'' राहेल की कब्र रामा के निकट थी (उत्पत्ति 35:16-18; 48:7; 1 शमूएल 10:2)। (2) इस्राएल के राज्य का बंटवारा होने के समय बिन्यामीन की सन्तान यहूदा के साथ रही (1 राजाओं 12:21, 23)। उन्हें अन्त में बाबुल के लोगों द्वारा बन्दी बनाकर ले जाया गया था[9] (1:11 पर टिप्पणियां देखें)। बाबुल या बेबीलोन को ले जाए जाने वाले यहूदी अधिक सम्भावना है कि दासता में ले जाए जाने के समय में रास्ते में राहेल की कब्र के पास से गुज़रे होंगे (यिर्मयाह 40:1)। (3) यिर्मयाह द्वारा राहेल का इस्तेमाल सांकेतिक रूप में इस्राएलियों की शोक करती हुई माताओं को दर्शाने के लिए किया गया, जिनके बच्चे या तो मारे गए थे या बन्दी बनाए गए थे।

बाबुल में ले जाए जाने पर अपने बच्चों के लिए राहेल का रोना हेरोदेस द्वारा बैतलहम की माताओं के बेटों के कत्ल किए जाने पर रोने का संकेत है। जेम्स ई. स्मिथ ने टिप्पणी की

है, ''राहेल ('भेड़') नाम का अर्थ भविष्यवक्ता के विवरण में बल जोड़ देता है। वह रामा में (मूलतया, पहाड़ की चोटी पर) भेड़ के अपने मेमनों के लिए मिमयाते हुए पुकारने को सुनना है।''[10] मत्ती द्वारा उद्धृत किया गया वचन चाहे शोकपूर्ण है पर इसे सकारात्मक अर्थ के कारण इसका इस्तेमाल किया गया हो सकता है। हेयर का अवलोकन, ''परन्तु राहेल की दुख भरी पुकार उस अध्याय में बनाई गई है जो भविष्य की आशा से भरपूर है, जिसमें नई वाचा की प्रतिज्ञा भी है (यिर्मयाह 31:31-34)। सम्भवतया मत्ती की मंशा ऐसे सम्बन्धों को उकसाने के लिए रामा की पुकार है।''[11]

नासरत में लौटना (2:19-23)

[19]हेरोदेस के मरने के बाद, प्रभु के दूत ने मिस्र में यूसुफ को स्वप्न में दिखाई देकर कहा, [20]कि ''उठ, बालक और उसकी माता को लेकर इस्राएल के देश में चला जा; क्योंकि जो बालक के प्राण लेना चाहते थे वे मर गए हैं।'' [21]वह उठा, और बालक और उसकी माता को साथ लेकर इस्राएल के देश में आया। [22]परन्तु यह सुनकर कि अरखिलाउस अपने पिता हेरोदेस की जगह यहूदिया पर राज्य कर रहा है, वहां जाने से डरा, और स्वप्न में चेतावनी पाकर गलील प्रदेश में चला गया। [23]वह नासरत नाम नगर में जा बसा कि वह वचन पूरा हो, जो भविष्यवक्ताओं के द्वारा कहा गया था कि ''वह नासरी कहलाएगा।''

आयत 19. कुछ समय बाद, **स्वर्गदूत स्वप्न में मिस्र में यूसुफ** के पास आया। यह दर्शन **हेरोदेस के मरने के बाद** दिया गया। एच. लियो बोल्स ने हेरोदेस महान की मृत्यु के समय पर टिप्पणी की:

> हेरोदेस रोम के बनने के बाद 750 वर्ष में समय की हमारी गणना की तिथि से चार साल पहले, फसह से थोड़ा पहले यरीहो में मरा [4 ई.पू.]। यह हिसाब लगाया गया है कि उस साल फसह 12 अप्रैल को आया था और हेरोदेस की मृत्यु फसह से सात से चौदह दिन पहले हुई।[12]

मृत्यु के समय हेरोदेस की उम्र सत्तर साल थी जिसमें लगभग उसने तैतीस वर्ष तक राज किया था। जोसेफस के अनुसार वह एक भयानक मौत मरा। उसके विवरण में गली हुई आंतें, सड़े और बदबू से भरे अंग, कीड़ों और बदबूदार सांस का वर्णन है। ऐसे व्यक्ति के लिए जिसने संसार को इतना परेशान किया हो ऐसा ही अन्त उपयुक्त था।

हेरोदेस को मालूम था कि यहूदी लोग उसके मरने पर शोक के बजाय आनन्द करेंगे। इस कारण उसने आदेश दिया कि यहूदियों के सभी अगुओं को यरीहो की रंगभूमि (हिप्पोड्रोम) में कैद किया जाए। उन्हें हर आवश्यक सुविधा दी जानी थी, परन्तु उसकी मृत्यु की घोषणा होने पर उन्हें मार डाले जाना था। परन्तु उसकी शैतानी चाल काम नहीं आई। दो जनों अर्थात हेरोदेस की बहन सलोमी और उसके पति अलेक्सस जिन्होंने यहूदी अगुओं की हत्या का संकेत भाड़े के टट्टुओं को देना था उन्हीं ने उन्हें छोड़ दिया। अपनी मृत्यु से पांच दिन पहले रोम की अनुमति से

एक अन्तिम खूनी कांड में हेरोदेस ने दोरिस के द्वारा अपने पुत्र अन्तिपतरस की मृत्यु का आदेश दे दिया जिसने उसकी हत्या का षड्यन्त्र रचा था।[14]

हेरोदेस महान की मृत्यु होने के बाद मलथेस से उसके एक पुत्र अरखिलाउस ने अपने पिता का जनाज़ा राजा के लिए उपयुक्त जनाज़ा होने को सुनिश्चित बनाया। उसे बैंजनी वस्त्र में लपेटा गया, उसके सिर पर सोने का मुकुट रखा गया और उसके हाथ में छड़ी पकड़वाई गई। सोने की अर्थी जिसके ऊपर उसका शव रखा गया था हर प्रकार के कीमती पत्थरों से जड़ी हुई थी। अर्थी के इर्द गिर्द उसके परिवार के कई लोग, चुनिंदा सिपाही और उसकी पूरी सेना थी। मार्ग में पांच सौ सेवक इत्र फैला रहे थे। उसकी देह को यरीहो से हेरोदियुम तक ले जाया गया जो बैतलहम से तीन मील दक्षिण पूर्व की ओर था।[15] यह हेरोदेस द्वारा बनाए गए कई भव्य किलों में से एक था। कई सालों बाद इस जगह की खुदाई के बाद पुरातत्व का दावा उसके ताबूत के साथ उसकी कब्र को ढूंढ़ने का है। परन्तु प्राचीन समयों में कीमती चीज़ें लूट ली जाती थीं, और ताबूत को तोड़ दिया जाता था और कंकाल निकाल लिया जाता था।

आयत 20. स्वर्गदूत ने यूसुफ को अपने परिवार के साथ **इस्राएल के देश** में लौट जाने का निर्देश दिया। उसने उसे और बताया, ''**क्योंकि जो बालक के प्राण लेना चाहते थे, वे मर गए हैं।**'' हेरोदेस मर चुका था, इस कारण अब वे यीशु के लिए कोई खतरा नहीं था। भाषा मूसा से कहे गए शब्दों से मिलती-जुलती है: ''मिस्र को लौट जा; क्योंकि जो मनुष्य तेरे प्राण के प्यासे थे वे सब मर गए हैं'' (निर्गमन 4:19)।

आयत 21. पिछली दो घटनाओं की तरह ही (1:24, 25; 2:14, 15), **यूसुफ** ने तुरन्त स्वर्गदूत के निर्दश का पालन किया और अपने परिवार के साथ मिस्र से चला गया।

आयत 22. इस्राएल देश में प्रवेश करने पर यूसुफ ने **सुना कि अरखिलाउस अपने पिता हेरोदेस की जगह यहूदिया पर राज कर रहा है**। अरखिलाउस ने चाहे यहूदियों को वचन दिया था, पर अधिकार की अपनी स्थिति पर आते ही उसने अपने पिता की तरह ही निर्दयी होना साबित कर दिया। उसके पिता की वसीहियत में अरखिलाउस को ''राजा'' का पद दिया गया था। परन्तु जब यहूदियों ने अगस्तुस कैसर के पास शिकायत की तो उसे ''राजपाल'' का पद दिया गया जिसका अर्थ है ''लोगों का हाकिम।'' उसे यहूदिया, सामरिया और एदोमिया पर अधिकार दिया गया जो मोटे तौर पर उसके पिता के राज्य से आता था। हेरोदेस की सामरी पत्नी मलखेस के पुत्र अन्तिपास और अरखिलाउस के भाई को गलील और पिरीया का ''चौथाई का हाकिम'' घोषित किया गया। यरूशलेम की क्लियोपेट्रा से हेरोदस का पुत्र फिलिप द्वितीय, त्रेखोनितुस, इतुरिया, गोलेनितिस, बतेनिया और ओरेनितुस की ''चौथाई का हाकिम'' बन गया। ''चौथाई का हाकिम'' का अर्थ है ''चौथे भाग पर शासक'' (देखें लूका 3:1)।[16] ''राजा,'' ''राजपाल'' और ''चौथाई का हाकिम'' शब्दों को उनके महत्व के क्रम के अनुसार घटते क्रम में दिया गया है।

हेरोदेस ने अपने जीवित रहते समय सोने के एक बड़े बाज जो रोमी सरकार का प्रतीक है को मन्दिर के बड़े द्वार पर लगाने का आदेश दिया था। दो महत्वपूर्ण यहूदी रब्बियों, यूदास और मथियास ने अपने छात्रों को उस बाज को गिराने के लिए प्रोत्साहित किया। उनमें से कुछ ने मन्दिर की छत पर चढ़कर बाज को उतारने और उसे नष्ट करने का प्रयास किया। इन छात्रों को तो गिरफ्तार करके छोटा-मोटा दण्ड दिया गया पर दोनों रब्बियों को जिंदा जला दिया गया।[17] हेरोदेस

महान की मृत्यु के बाद वाले पिन्तेकुस्त के दिन इन दो सम्मानित पुरुषों की मृत्यु के विरोध में यहूदियों में दंगा हो गया। अरखिलाउस ने गड़बड़ी को दूर करने के लिए कठोर कार्यवाही की; इस प्रक्रिया में तीन हज़ार यहूदी मारे गए।[18] ऐसी और नृशंसताओं के बाद यहूदियों ने अगस्तुस कैसर को अपील की। अन्त में नृशंस शासन के नौ साल बाद अरखिलाउस को गाउल में वियने में देश निकाला दे दिया गया, जहां 6 ई.में. उसकी मृत्यु हो गई।[19] उसकी मृत्यु के बाद उसकी हुकूमत वाले इलाके को रोमी इलाका बना दिया गया और फिर वहां का शासन एक कोषाधिकारी द्वारा चलाया जाता था। क्विरिनियुस, कोपेनियुस, अम्बिवियुस, अन्नियुस रूफुस, वेलरियुस ग्रेटस, फेलिक्स और फेसतुस इन सभी ने इस पद पर काम किया, परन्तु इन सब से प्रसिद्ध पिन्तुयुस पिलातुस था जिसने यीशु को मृत्यु दण्ड दिया (27:2, 11-26)।

यूसुफ को अरखिलाउस के विश्वासघात की बात में कोई संदेह नहीं था। इस कारण उसका बैतलहम में लौटने से **डरना** उचित था। उसे **स्वप्न** में परमेश्वर द्वारा यहूदा छोड़ने की चेतावनी दी गई थी। उस समय लगेगा कि उसे **गलील** में जाने को भी कहा गया था, जहां अन्तिपास हाकिम था। हेरोदेस महान के इस पुत्र को शान्ति के व्यक्ति के रूप में माना जाता है। बोल्स ने अन्तिपास के बारे में कहा:

> वह अलग आदमी था और उसने अपने भाई अरखिलाउस से अधिक सदयता से राज किया। हेरोदेस अन्तिपास और अरखिलाउस की इस समय में एक दूसरे के साथ शत्रुता थी; यूसुफ और उसके परिवार के लिए यह सबसे सही परिस्थिति थी।[20]

गलील फलस्तीन का उत्तरी भाग था। यह शैक्षणिक संस्थानों के लिए प्रसिद्ध क्षेत्र नहीं था, बल्कि इसका प्राकृतिक वातावरण ने इन मछुआरों और कारोबारियों का स्थान बना दिया था। इसके अलावा इसमें अन्यजातियों की बहुत आबादी थी (4:15)। इस इलाके के यहूदियों को प्रसिद्ध रब्बियों के विरोध में माना जाता था और इस कारण दूसरे लोगों को भी जो उनके पीछे चलते थे (देखें यूहन्ना 7:52; प्रेरितों 2:7; 4:13)। जोसेफस के अनुसार, गलील में 240 नगर और गांव थे, जिनमें प्रत्येक की आबादी पन्द्रह हज़ार से अधिक नहीं थी।[21]

आयत 23. यूसुफ अपने परिवार के साथ **नासरत** में बस गया जहां उसका और मरियम का गृह नगर होगा (देखें लूका 2:4)। **कि वह वचन पूरा हो, जो भविष्यवक्ताओं के द्वारा कहा गया था कि ''वह नासरी कहलाएगा।''** मत्ती ने एक वचन ''भविष्यवक्ता'' के बजाय बहुवचन ''भविष्यवक्ताओं'' शब्द इस्तेमाल किया। पुराने नियम में यह स्पष्ट भविष्यवाणी देता कोई पद नहीं है और इसके सही-सही स्रोत का पता नहीं है। इस भविष्यवाणी के स्रोत की कम से कम तीन व्याख्याएं हैं।

पहले तो, कुछ लोगों का विचार है कि ''नासरी'' शब्द नज़ीरी मन्नत से जुड़ा है (गिनती 6; न्यायियों 13:5-7)। परन्तु यीशु चाहे परमेश्वर के लिए पवित्र था पर वह नाज़ीर नहीं था। वह ''खाता-पीता'' आया (11:18, 19) और शवों को छूने से हिचकिचाता नहीं था (मरकुस 5:35, 41; लूका 7:14)। इसके अलावा ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि यीशु ने अपने बाल बढ़ाए हों।

दूसरा, अन्यों का सुझाव है कि ''नासरी'' उस डाली को कहा गया हो सकता है जो यिशै के ठूंठ में से निकलनी थी जिसका उल्लेख यशायाह 11:1 में है। ''नासरी'' शब्द से मिलते-जुलते

इब्रानी शब्द (*netser*) का अर्थ ''डाली'' या ''शाखा'' है। यदि यह शब्दों का खेल होता तो पहले दो अध्यायों को दाऊद की सन्तान के रूप में यीशु के हवालों से कोष्ठकों में रखा जाता (1:1; 2:23)।

तीसरा, कई टीकाकारों का सुझाव है कि लेखक उन भविष्यवाणियों को जोड़ रहा था कि यीशु को तुच्छ जाना जाना था और उस पर ठट्ठा उड़ाया जाएगा (देखें भजन संहिता 22; 69; यशायाह 49:7; 53:2, 3, 8; दानिय्येल 9:26)। यीशु को नासरत के लोगों द्वारा तुच्छ जाने गए व्यक्ति के रूप में जाना जाता था (यूहन्ना 1:45, 46) और वास्तव में उससे मनुष्यों द्वारा घृणा की गई (12:24; 27:21-23, 63; लूका 23:11; यूहन्ना 1:11; 5:18; 6:66; 9:22)।

इस अन्तिम व्याख्या की सम्भावना अधिक लगती है। मत्ती ने अन्य कई फॉर्मूलों के पूरा होने के विपरीत 2:23 में क्रिया का आभाव (*legontos*) जिसका अनुवाद ASV में ''कहावत'' किया गया है। (परन्तु NASB में बिना अनुवाद छोड़ा गया है)। इस चूक और भविष्यवक्ताओं को बहुवचन के हवाले के सम्बन्ध में आर. टी. फ्रांस ने निष्कर्ष निकाला है:

> यह सुझाव देता है कि ['वह नासरी कहलाएगा''] का अर्थ किसी विशेष पद का उद्धरण होना नहीं बल्कि भविष्यवाणी की उम्मीद के विषय का सार है। इस कारण यह सुझाव दिया गया है कि मत्ती ने नासरत की गुमनामी में एक विनम्र और ठुकराए हुए मसीहा के पुराने नियम के संकेतों को पूरा होते हुए देखा।[22]

जैक पी. लूईस ने लिखा है, ''उद्धरण की पृष्ठभूमि चाहे जो प्रमाणित हो, पर नये नियम में '[नासरी]' शब्द का अर्थ 'नासरत वासी' ही लगता है।''[23] यह अध्याय मसीह के जन्म स्थान बैतलहम के साथ आरम्भ होता है (2:1), और उसके गृहनगर नासरत के साथ समाप्त होता है (2:23)। यह दिखाता है कि अपने जन्म और बड़ा होने के सालों में दोनों जगह यीशु ने पुराने नियम की भविष्यवाणियों को पूरा किया।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

यह बड़े दिन के बाद का दिन (2:13-18)

बड़े दिन का मौसम साल का अद्‌भुत समय होता है। उस समय संसार के कई भागों में जश्न मनाए जाते हैं। फोक्स प्रेम, आनन्द, पृथ्वी पर शान्ति और लोगों की भलाई होता है। लोगों में उदारता की आत्मा है।

बड़े दिन के बाद वाले दिन के बाद आपके घर में कैसा होता है? खाली डिब्बों, फटे हुए रैकों और टूटी ऐनकों पर विचार करें। टीन के कैन, बेपरवाही से फैंके नज़र आते हैं। आम तौर पर बड़े दिन का जोश जो पहले था लगता है उन रिटर्न गिफ्टों को जो उन्हें पसन्द नहीं थे लौटाने के लिए लम्बी कतारों से खड़े लोगों के क्रोध से छूमन्तर हो गया है। क्या यह अच्छा नहीं होगा, यदि हम पूरा साल बड़े दिन के जोश को बनाए रख सकें?

दिसंबर 25 वास्तव में मसीह का जन्म दिन नहीं है पर बहुत से लोग इसे उस दिन मनाते हैं। उस मौसम में जहां उनका ध्यान है हमें उसका लाभ लेना चाहिए। उसके जन्म पर चर्चा

सुसमाचार के वृत्तांतों में वर्णित घटनाओं के शब्दों में की जा सकती है। क्या हम कभी उसके जन्म के बाद के दिनों में होने वाली बातों पर विचार करने के लिए रुकते हैं ? हमें उन घटनाओं को याद करना चाहिए जो यीशु के जन्म के बाद के दिनों में हुईं। हमें मसीह के जन्म के आनन्द को साल भर मनाने की कोशिश करनी चाहिए।

माता-पिता की विशेष भूमिका (2:13-15, 19-23)

यूसुफ और मरियम की अपने पुत्र यीशु की रक्षा और पालन पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका थी। मैक्गर्वे ने लिखा है:

> उस बच्चे को हर प्रकार की हानि से बचाने और उसका पालन पोषण करना उन्हें परमेश्वर द्वारा दिए गए काम को करना था और उन्होंने पूरी ईमानदारी के साथ उस स्वर्गीय भरोसे को पूरा किया। परन्तु मरियम और यूसुफ ही अकेले माता-पिता नहीं हैं जिन्हें इस प्रकार से रखा गया था; आम तौर पर माता पिता अपने जीवन में इकलौते बच्चे को लाने और उसका सही पालन पोषण करने के द्वारा सबसे बड़ा काम करते हैं।[24]

परमेश्वर का भय मानने वाले माता-पिता के बाइबल के और उदाहरण जिन्होंने बच्चों का पालन पोषण शानदार ढंग से किया उनमें हैं (1) मूसा, हारून और मरियम के माता-पिता अम्राम और योकेबेद (निर्गमन 2:1-10; गिनती 26:59); (2) शमूएल के माता-पिता एलकाना और हन्ना (1 शमूएल 1:1-2:11); (3) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के माता पिता जकर्याह और इलीशबा (लूका 1) और (4) तीमुथियुस की नानी यूनीके और माता लोईस (2 तीमुथियुस 1:5; देखें प्रेरितों 16:1-3)। ( )

आज मसीही माता-पिता को प्रभु में अपने बच्चों का पालन पोषण करने की बड़ी चुनौती है (इफिसियों 6:4; तीतुस 2:4)। बच्चों को शारीरिक और आत्मिक दोनों प्रकार की हानि से बचाना चाहिए। सही ढंग से बढ़ने फूलने के लिए उन्हें प्रशिक्षण, प्रोत्साहन और अनुशासन का अच्छा मिश्रण मिलना चाहिए। उन्हें बातों से और भक्तिपूर्ण जीवन के द्वारा परमेश्वर की सच्चाई बताई जानी चाहिए। विश्वास करने वाले बच्चों का पालन-पोषण करना जो परमेश्वर के राज्य में सेवा करते हैं, जीवन की सबसे बड़ी प्राप्तियों और आशिषों में से एक है।

डेविड स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]फिलो *फ़्लेक्कस* 6. [2]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 43. [3]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, *द न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू एंड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 29. [4]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 1-13,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33ए (डलास: वर्ड बुक्स, 1993), 36. [5]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रिटेशन (लुइसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 15-16. [6]इन कहानियों के बीच और समानताओं के लिए, देखें हैग्नर, 34. [7]मैक्गर्वे, 29. [8]हैग्नर, 37. [9]इसके विपरीत कुछ विद्वान यिर्मयाह 31:15 के उद्धरणों को उत्तरी गोत्रों की अश्शूरियों की दासता से जोड़ते हैं (722 ई.पू.)। वे ध्यान दिलाते हैं कि राहेल यूसुफ की माता भी थी और

इस्राएल में दो प्रमुख गोत्र उसके गुटों अर्थात एप्रैम और मनश्शै में ही से थे। इसके अलावा ''एप्रैम'' भविष्यवाणी के आस पास के संदर्भ में मिलता है (यिर्मयाह 31:18, 20)। [10]जेम्स ई. स्मिथ, *जर्मायाह एंड लेमेंटेशन,* बाइबल स्टडी टैक्सट बुक सीरीज (जोप्लिन, मिजोरी: कॉलेज प्रैस, 1972), 522.

[11]हेयर, 16. [12]एच. लियो बोल्स, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1936), 58. [13]जोसेफस *एंटीक्विटीस* 17.6.5. [14]वही, 17.6.5; 17.8.2; 17.7.1. [15]वही, 17.8.3. [16]वही, 17.11.4. [17]वही, 17.6.2-4. [18]वही, 17.9.3. [19]वही, 17.13.2. [20]बोल्स, 61.

[21]जोसेफस *लाइफ* 45; *वार* 3.3.2. [22]आर. टी. फ्रांस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 88-89. [23]जैक पी. लुइस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 1, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 52. उसने मत्ती 2:23; 21:11; 26:71; लूका 18:37; यूहन्ना 1:45, 46; 18:5, 7; 19:19; प्रेरितों 10:38; 24:5 की बात की। [24]मैक्गार्वे, 29.